

एक मज़बूत और सुरक्षित साइबर प्रणाली : वर्तमान की अपरहार्य आवश्यकता!

सरकारी स्तर पर भले ही आज "डजिटल इंडिया" जैसे कार्यक्रमों की बढौलत इंटरनेट की तथा इससे जुड़े लाभों की चर्चा छयादा हो रही हो, कति भारत जैसे देश में भी बड़ी आबादी दशक भर से भी अधिक समय से इस प्रणाली को अपने दैनिकि जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाए हुए हैं। बात चाहे ईमेल के माध्यम से संदेश आदान-प्रदान करने की हो या अपने बलियों के भुगतान की, ऑनलाइन खरीदारी की हो या नौकरियों के लिये आवेदन की, बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठाने की हो अथवा रेलवे या हवाई जहाजों के टिकट बुक करने की, सब चीजों में इंटरनेट का इस्तेमाल भारत में लंबे अरसे से हो रहा है। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया व स्मार्ट फोन (वशिषकर कम कीमत वाले) के आने ने इस क्षेत्र में एक कस्मि का समाजवाद सा ला दिया है तथा यह सुविधा नपिट आम लोगों तक भी पैठ बनाने में सफल रही है।

कहना मुश्किल है कियदि मात्र एक दिन के लिये भी फेसबुक अथवा व्हाट्सएप की सुविधा बंद कर दी जाए तो अधिक समस्या कसि आयु वर्ग के लोगों को पेश आएगी, क्योंकि लगभग सभी आयुवर्ग के लोग सरलता और कुशलता से इसका खासा इस्तेमाल कर रहे हैं। कई मामलों में तो वे बच्चे जिन्होंने बमुश्किल अपनी टीनएज में जीवन में इस हद तक पैठ बना लेने के चलते असली संसार के साथ-साथ एक आभासी संसार ने भी आकार ले लिया है, जिसे इंटरनेट की भाषा में "वर्चुअल वर्ल्ड" की संज्ञा दी गई है।

अब चूँकि आमजन के सरोकार तथा नरिभरता इस प्रणाली पर संवेदनशीलता के स्तर तक बढ़ गई है, इसका मज़बूत और सुरक्षित होना भी उसी हद तक ज़रूरी हो गया है। आज एक ऐसा समय आ गया है जब साइबर प्रणाली में कुछ देर की गड़बड़ी भी अरबों-खरबों के नुकसान और अनेक अन्य जटिलताओं का कारण बन सकती है।

अपने आरंभिक दौर में वलासति लगने वाली कोई चीज़ एक अरसे के बाद किसी भी अन्य सामान्य ज़रूरत की भाँति हमारे जीवन की आवश्यकता बन जाती है। ऐसा ही इंटरनेट और अन्य साइबर सुविधाओं के साथ भी है। हालाँकि भारत इस मामले में कुछ हद तक अभी भी संक्रमण काल से गुज़र रहा है, क्योंकि हमारे यहाँ अनेकों सुविधाओं का कुछ प्रतिशत भाग ही डजिटल हो पाया है तथा एक बड़ा तबका आज भी उन कार्यों को करने के लिये परंपरागत (अर्थात् ऑफलाइन) तरीकों का ही इस्तेमाल करता है। इसका एक कारण यह है कि एक बड़े तबके तक कंप्यूटर अथवा इंटरनेट तो छोड़िये, बजिली जैसी आधारभूत चीज़ भी हम अब तक नहीं पहुँचा पाए हैं। खैर, आज नहीं तो कल ऐसा कर देंगे तथा तब यह और भी छयादा आवश्यक हो जाएगा कि हमारी साइबर प्रणाली मज़बूत के साथ-साथ सुरक्षित भी हो।

कोई चीज़ हमारे लिये महत्त्वपूर्ण बन चुकी है, यह जानने के लिये ज़रूरी है कि एक बार उसके बिना जीवन की एक कच्ची सी कल्पना की जाए। ऐसी ही एक कल्पना मैं प्रस्तुत कर रही हूँ:

यदि हमारी साइबर प्रणाली किसी वजह से काम करना बंद कर दे तो-

- हमारी बैंकिंग व्यवस्था चरमरा जाएगी।
- हमारा शेयर बाज़ार पूरी तरह ठप हो जाएगा।
- हमारी संचार व्यवस्था (मोबाइल, टेलीफोन), प्रसारण व्यवस्था (रेडियो, टीवी, सनिमा) काम करना बंद कर देगी।
- नौहन प्रणाली के बिना हमारा रेल, वायु यातायात आदि संचालित नहीं हो पाएगा।
- कंपनियों द्वारा ऑनलाइन ट्रेडिंग संभव नहीं होगी।
- इस पर नरिभर अनुसंधान के हमारे कार्य (वशिषकर अंतरिक्ष अनुसंधान से जुड़े) रुक जाएंगे।

उपरोक्त बडुियों से साइबर प्रणाली के दुरूस्त रहने के महत्त्व का एक सामान्य अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। हालाँकि ये अनुमान साइबर प्रणाली के कार्य करना बंद कर देने से संबंधित थे, जबकि इसका एक अन्य पहलू है- किसी खराबी या अन्य गड़बड़ी के चलते इसका गलत ढंग से कार्य करने लगना, ऐसा होने पर परिणाम कतिने भयानक हो सकते हैं इसका तो अनुमान भी कल्पना से परे लगता है।

साइबर प्रणाली में गड़बड़ी किसी तकनीकी खराबी का परिणाम भी हो सकती है तथा किसी बाहरी हस्तक्षेप का भी, जिसे कंप्यूटर की भाषा में साइबर हमला कहा जाता है।

अपने समय के प्रमुख रक्षा चतियों, जैसे मैकियावेली, ए.टी. माहन तथा डुहेट आदिने क्रमशः थल, जल तथा गगन से होने वाले आक्रमणों से नपिटने की रणनीतियाँ तो गढ़ी, कति इस आभासी संसार में होने वाले युद्ध की तो उन्होंने अपने समय में कल्पना भी नहीं की होगी।

एक नयोजति तरीके से अंजाम दिया गया साइबर हमला बिना आवाज़ कयि शत्रु को पस्त करने की ताकत रखता है। इस तरीके से अपनी लेशमात्र की जनहानिके

बना हम शत्रु का एक बड़ा नुकसान करके "हींग लगे न फटिकरी, रंग चोखा का चोखा" वाली कहावत को चरतिार्थ कर सकते हैं।

ईरान के यूरेनियम संवर्द्धन तथा परमाणु कार्यक्रम से जुड़े 5 संगठनों पर वर्ष 2010 (या उससे कुछ पहले) में 'स्टक्सनेट' वायरस से कथि हमले का उदाहरण यहाँ लिया जा सकता है जिसने ईरान के सेंट्रीफ्यूज को नयित्रण से बाहर कर उसके परमाणु कार्यक्रम को वर्षों पीछे धकेल दिया था। यहाँ शत्रु देश (संभवतः इजराइल अथवा संयुक्त राज्य अमेरिका) को न तो कोई सेना भेजनी पड़ी और न ही कोई बम गरिना पड़ा। इसी प्रकार "डुकु" नामक वायरस को ईरान के परमाणु कार्यक्रम की रूपरेखा की नकल करने के लयि बनाया गया था।

हालयाि दनिों में 'वानाकराई' नामक मालवेयर का हमला काफी चर्चति रहा जो आपके कंप्यूटर की जरूरी सूचनाओं को एन्करपिट कर देता था तथा वापस उन तक पहुँच बनाने के बदले आपसे फरिती मांगता था (जसिके चलते इसे 'रैनसमवेयर' की श्रेणी में रखा गया)। इस तरह का साइबर हमला व्यापक स्तर पर हानि पहुँचाने की क्ममता रखता है।

ये हमले यद केवल आर्थिक हानि पहुँचाते हों तो एक दफा इन्हें सहन भी कया जा सकता है, कति आजकल साइबर जासूसी की अवधारणा ने लोगों की नजिता और देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा तक को खतरे में डाल दिया है। वर्ष 2006 से जारी "ऑपरेशन शेडी रेट" तथा भारत को लक्षति कया गया तथा वर्ष 2009 में पकड़ में आया 'घोस्टनेट' का हमला जसिने भारतीय सुरक्षा अभकिरणों की सूचनाओं तक पहुँच बना ली थी आदि इस श्रेणी में आते हैं।

साइबर संसार की चुनौतियों में एक और चुनौती सोशल मीडया साइटों के बाद से पैदा हुई है, वह है झूठी अथवा तेज़ी से माहौल बगिड़ने में सक्षम संवेदनशील खबरों का शीघरता से प्रसार। कतिनी ही बार सोशल मीडया पर वायरल हुई इन संवेदनशील खबरों के चलते देश का सांप्रदायिक माहौल बगिड़ने का खतरा पैदा हो चुका है। 2012 में ऐसी ही कुछ खबरों के चलते बंगलूरु में रह रहे पूर्वोत्तर भारत के लोगों का बड़ी संख्या में वहाँ से पलायन हुआ था।

अब बात करते हैं इन चुनौतियों से नपिटने की जसिके लयि हमें साइबर सुरक्षा वशिषज्जों की जरूरत होगी। यहाँ भी हालात कुछ संतोषजनक दिखाई नहीं देते। वशि्व में भले ही भारत को एक आईटी सुपरपावर के तौर पर देखा जाता हो कनित्तु वर्ष 2013 में राष्ट्रीय समाचार-पत्र में छपी एक खबर के मुताबिक भारत के पास कुल मलिकर मात्र 556 साइबर सुरक्षा वशिषज्ज हैं जबकि हमें ऐसे लाखों वशिषज्जों की आवश्यकता है।

हमें समझना होगा कि जसि प्रकार हम अपने रक्षा बजट में कसि प्रकार की कोई कसर नहीं छोड़ते, उसी प्रकार सुरक्षा के लहिाज से इसे भी एक ऐसा मोर्चा मानना होगा जसि अनदेखा छोड़ने के परिणाम घातक हो सकते हैं।

इस मोर्चे पर वीरता के स्थान पर तकनीक की समझ हमें बचाएगी और हमें इस तकनीकी समझ वाले लोगों की एक फौज उसी से तरह तैयार करने की जरूरत है जैसे चीन, अमेरिका अथवा रूस जैसे देशों ने तैयार की है, तभी हम चहुँओर से अपने सुरक्षति होने का दावा कर सकेंगे। हालाँकि ऐसा भी नहीं है कि भारत ने इस चुनौती को पूर्णतया अनदेखा छोड़ दिया हो। वर्ष 2004 में ही हमने साइबर सुरक्षा संबंधी चुनौतियों से नपिटने के लयि "इंडयिन कंप्यूटर एमरजेंसी रसिर्पोन्स टीम" (जसि प्रचलति रूप से आईआरटी-इन के नाम से जाना जाता है) नाम के एक समरपति अभकिरण का गठन कर लया था जो समय-समय पर साइबर सुरक्षा से जुड़े वभिन्न उपायों को लागू करता रहता है। ऐसी ही एक पहल इस संस्था ने इस साल फरवरी में 'साइबर स्वच्छता केंद्र' की शुरुआत करके की। 'साइबर स्वच्छता केंद्र' का कार्य डेस्कटॉप और मोबाइल के लयि सकियोरटि सॉल्यूशन प्रदान करना है। इस संस्था व अन्य अभकिरणों के संयुक्त प्रयासों का ही फल था कि हाल में हुए 'वानाकराई' नामक मालवेयर के हमले का भारत पर छायादा असर नहीं हुआ। इसके अलावा, एक श्रेणी एथकिल हैकरस की भी है जो अपने तकनीकी ज्ञान व प्रतभिा का इस्तेमाल ऐसे हमलों को नाकाम करने में करते हैं। हालाँकि, ऐसे एथकिल हैकरस की पहचान करना मुश्कलि है कति भारत में इनकी एक मजबूत उपस्थति अवश्य है। अन्य सजग देशों की भाँति भारत को भी संभावति साइबर हमलों व इनसे जुड़ी अन्य गड़बड़यियों से नपिटने के लयि और अधिक संस्थागत प्रयासों की जरूरत है तभी हम भरोसे के साथ डिजिटलीकरण के लाभों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचा पाएँगे।